जागें! अपनी प्राथमिकताएँ फिर से तय करें!
रविवार, 8 नवंबर 2026

मुख्य पाठ: हाग्गै 1–2

जब हम जीवन में आगे की ओर बढ़ते हैं, तो अक्सर अपनी योजनाएँ बनाते हुए, व्यक्तिगत लक्ष्यों का पीछा करते हुए और एक बेहतर जीवन बनाने का प्रयास करते हुए आगे बढ़ते हैं। हम फलदायी हुए बिना व्यस्त हो जाते हैं। हो सकता है कि हम उन बातों की उपेक्षा कर रहे हों जो वास्तव में महत्वपूर्ण हैं।

जब हम उन बातों के प्रति अनजान हो जाते हैं जो स्पष्ट होनी चाहिए, तब हमें जाग जाना चाहिए।

मनन करें और विचार करें: मैं कहाँ जा रहा हूँ? मैं क्या बना रहा हूँ? क्या मेरा जीवन उस दिशा में आगे बढ़ रहा है जो परमेश्वर मेरे लिए चाहता है?

हाग्गै के माध्यम से यहूदा के लोगों को परमेश्वर ने जो संदेश दिया, वह हमें कुछ शिक्षाएँ देता है।

हाग्गै की पृष्ठभूमि:

बेबीलोन की बंधुआई के बाद, यहूदी बंधुओं का पहला समूह लगभग 538 ईसा पूर्व यरूशलेम लौट आया। उनके अगुवे जरुब्बाबेल थे, जो राजा दाऊद के वंशज थे, और महायाजक यहोशू थे। वे अपने नगर और उस मंदिर का पुनर्निर्माण करने की आशा के साथ लौटे थे, जिसे बेबीलोन के साम्राज्य ने नष्ट कर दिया था। उन्होंने मंदिर की नींव डाली। लेकिन शीघ्र ही बाहरी विरोध और निराशा के कारण काम रुक गया।

समय बीतने के साथ, लोग अपने-अपने जीवन में बस गए और अपने घरों का पुनर्निर्माण करने लगे—जबकि मंदिर खंडहर ही बना रहा।

520 ईसा पूर्व में, उनकी वापसी के 18 वर्ष बाद, परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ता हाग्गै को उन्हें अपने चालचलन पर विचार करने की चुनौती देने के लिए भेजा। हाग्गै के माध्यम से परमेश्वर ने उन्हें जागने, अपने चालचलन पर विचार करने और उस कार्य को फिर से शुरू करने के लिए बुलाया जो उसने उन्हें सौंपा था।

परमेश्वर ने हाग्गै को उन्हें जागने और अपनी प्राथमिकताओं को फिर से व्यवस्थित करने का संदेश देकर भेजा।

हाग्गै 1:5 इसलिए अब सेनाओं का यहोवा यों कहता है, 'अपने चालचलन पर विचार करो!'

हाग्गै 1:7 सेनाओं का यहोवा यों कहता है, 'अपने चालचलन पर विचार करो!'

“अपने चालचलन पर विचार करने” के लिए प्रयुक्त इब्रानी शब्द का अर्थ है ध्यानपूर्वक विचार करना, ठीक करना या निर्धारित करना। यह लोगों से आग्रह करता है कि वे रुकें और बिना सोचे-समझे जीवन में बहते रहने के बजाय अपने जीवन की स्थिति का सावधानीपूर्वक मूल्यांकन करें।

आज हम हाग्गै की पुस्तक से जागने के चार आह्वानों पर विचार करेंगे।

सुनते समय हम इस एक प्रश्न को अपने सामने रखेंगे: क्या मैं अपना जीवन अपने तरीके से बनाने में इतना व्यस्त हो गया हूँ कि परमेश्वर ने मेरे लिए जो उद्देश्य ठहराया है, उसकी उपेक्षा कर रहा हूँ?

I. गलत प्राथमिकताओं से जागें

हाग्गै 1:2-4

सेनाओं का यहोवा यों कहता है, “ये लोग कहते हैं, ‘यहोवा के भवन के बनाने का समय अभी नहीं आया है।’” तब हाग्गै भविष्यद्वक्ता के द्वारा यहोवा का यह वचन पहुँचा, “क्या तुम्हारे लिये अपने छतदार घरों में रहने का समय है, जबकि यह भवन खंडहर पड़ा है?”

परमेश्वर उस बात की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करता है जिसके प्रति वे अनजान हो गए थे।

लोगों ने अपने घरों को प्राथमिकता दी, जिसके कारण उनकी दृष्टि परमेश्वर के भवन और उसकी प्राथमिकताओं से हट गई। वह इस असंतुलन को चुनौती देता है कि वे अपने घरों पर कितना ध्यान दे रहे थे, जबकि परमेश्वर का भवन खंडहर पड़ा था। उन्हें रुककर, मनन करके और इस अंतर पर विचार करने की आवश्यकता थी कि परमेश्वर ने उन्हें क्या करने के लिए बुलाया था और वे वास्तव में क्या कर रहे थे।

उन लोगों की तरह, हम भी अच्छी नीयत के साथ शुरुआत कर सकते हैं। हम बड़े उत्साह, परमेश्वर की सेवा करने और उसका अनुसरण करने के जुनून के साथ शुरुआत कर सकते हैं। लेकिन हम निराश और विचलित हो जाते हैं, या दैनिक जीवन की नियमित माँगों में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि धीरे-धीरे जो बातें कभी हमारे लिए महत्वपूर्ण थीं, वे पीछे छूट जाती हैं। हो सकता है कि हमें इस बात का एहसास भी न हो कि हम परमेश्वर की बुलाहट से कितनी दूर भटक गए हैं।

क्या परमेश्वर की उपस्थिति और उसके उद्देश्य हमारे जीवन और हमारी ऊर्जा में सर्वोच्च स्थान पाते हैं? या फिर अक्सर सब कुछ पूरा कर लेने के बाद जो बचता है, हम वही उसे देते हैं? अब अपनी प्राथमिकताओं की जाँच करने का समय है।

हाग्गै 1:5-7

इसलिए अब सेनाओं का यहोवा यों कहता है, "अपने चालचलन पर विचार करो! तुमने बहुत बोया, परन्तु थोड़ा ही काटते हो; तुम खाते हो, परन्तु तृप्त नहीं होते; तुम पीते हो, परन्तु प्यास नहीं बुझती; तुम कपड़े पहनते हो, परन्तु गर्म नहीं होते; और जो मजदूरी कमाता है, वह अपनी मजदूरी को छेद वाली थैली में रखने के लिये कमाता है।" सेनाओं का यहोवा यों कहता है, "अपने चालचलन पर विचार करो!"

पद 6 में उन लोगों के जीवन का वर्णन किया गया है जो लगातार परिश्रम तो कर रहे थे, लेकिन उनके पास दिखाने के लिए कुछ भी नहीं था। परमेश्वर बताता है कि वे कड़ी मेहनत कर रहे थे, लेकिन उससे उन्हें संतुष्टि या तृप्ति नहीं मिल रही थी।

उनके परिश्रम की तुलना में उन्हें मिलने वाला प्रतिफल या परिणाम बहुत कम था।

उनके पास खाने के लिए बहुत कुछ था, लेकिन वे कभी तृप्त नहीं होते थे।

उनकी आवश्यकताएँ पूरी हो रही थीं, लेकिन उनमें संतोष नहीं था।

वे पैसा कमाते थे, लेकिन उनकी थैलियाँ छेद वाली थीं।

उनकी स्वार्थ-केंद्रित प्राथमिकताओं ने उन्हें उस आशीष का अनुभव करने से रोक दिया जो परमेश्वर उनके लिए चाहता था।

स्वार्थ-केंद्रित प्राथमिकताओं पर बनाया गया जीवन हमेशा खालीपन का अनुभव कराएगा, चाहे हमारे प्रयास कितने ही बड़े क्यों न हों।

परमेश्वर की उपस्थिति - सर्वोच्च प्राथमिकता

परमेश्वर चाहता है कि उसकी उपस्थिति हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता हो। उसकी महिमा, उसका नाम और उसकी प्रतिष्ठा सबसे पहले आते हैं।

हाग्गै 1:8-9

"पहाड़ पर चढ़ जाओ और लकड़ी ले आओ, और इस भवन को बनाओ; और मैं उससे प्रसन्न होऊँगा और अपनी महिमा प्रकट करूँगा," यहोवा कहता है। "तुमने बहुत की आशा की, परन्तु थोड़ा ही मिला; और जब तुम उसे घर ले आए, तो मैंने उसे उड़ा दिया। क्यों?" सेनाओं का यहोवा कहता है, "इसलिए कि मेरा भवन खंडहर पड़ा है, जबकि तुम में से हर एक अपने-अपने घर की ओर दौड़ता है।"

यहूदा के लोगों के विपरीत, हम पत्थरों का मंदिर नहीं बना रहे हैं। परमेश्वर हाथों से बनाए हुए घर में नहीं रहता (प्रेरितों 17:24)। वह हममें रहता है। हम सब मिलकर वह मंदिर हैं जिसमें उसका आत्मा निवास करता है। उसकी इच्छा है कि वह हममें निवास करे और अपनी महिमा प्रकट करे। वह चाहता है कि वह हममें और हमारे द्वारा शासन करे और राज्य करे।

1 कुरिन्थियों 3:16

क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर का मंदिर हो और परमेश्वर का आत्मा तुम में निवास करता है?

इस आह्वान के बाद, लोग जाग उठे—उन्होंने यहोवा की वाणी मानी। यहोवा ने अपनी उपस्थिति के द्वारा उन्हें प्रोत्साहित किया और जरुब्बाबेल, यहोशू तथा लोगों के हृदयों को उभारा, और उन्होंने यहोवा के भवन पर काम किया। (हाग्गै 1:12-15)

हालाँकि, पुनर्निर्माण कार्य शुरू होने के लगभग चार सप्ताह बाद उनका उत्साह कम हो गया और निराशा ने उन्हें घेर लिया। लोग अपने द्वारा बनाए जा रहे मंदिर की तुलना उस मंदिर से करने लगे जिसे उन्होंने पहले देखा था। बुज़ुर्ग लोगों को सुलैमान द्वारा बनाए गए भव्य और शानदार मंदिर की याद थी।

वे काम करने के लिए प्रेरित हुए थे, लेकिन जैसे ही उन्होंने अपने काम की तुलना मंदिर की पिछली महिमा से की, उनके प्रयास बहुत छोटे लगने लगे। उनके सामने का काम बहुत बड़ा लगने लगा।

हाग्गै 2:2-3

“शालतीएल के पुत्र यहूदा के राज्यपाल जरुब्बाबेल से, और यहोसादाक के पुत्र महायाजक यहोशू से, और बचे हुए लोगों से कह, ‘तुम में से ऐसा कौन बचा है जिसने इस भवन को उसकी पहली महिमा में देखा हो? और अब तुम इसे कैसी दशा में देखते हो? क्या यह तुम्हारी दृष्टि में उसके सामने कुछ भी नहीं है?’”

जब हम अपने काम की तुलना किसी बड़े काम या किसी दूसरे व्यक्ति के काम से करते हैं, तो हम परमेश्वर के उद्देश्य से अपनी दृष्टि खो सकते हैं और निराश हो सकते हैं। हम आज्ञाकारिता के बजाय सफलता को महत्व देने लगते हैं और यह एक गलत प्राथमिकता बन जाती है।

गलत प्राथमिकताएँ हमारा ध्यान परमेश्वर की उपस्थिति और उस कार्य से दूर कर देती हैं जिसे करने के लिए उसने हमें बुलाया है।

II. उस परमेश्वर के प्रति जागें जो आपके साथ है

हाग्गै 2:4-5

4 "हे जरुब्बाबेल, हियाव बाँध," यहोवा कहता है; "और हे महायाजक यहोसादाक के पुत्र यहोशू, हियाव बाँध; और हे देश के सब लोगों, हियाव बाँध," यहोवा कहता है, "और काम करो; क्योंकि मैं तुम्हारे संग हूँ," सेनाओं का यहोवा कहता है।

5 "उस वचन के अनुसार जो मैंने तुम्हारे मिस्र से निकलने के समय तुम्हारे साथ वाचा बाँधी थी, मेरा आत्मा तुम्हारे बीच में बना रहता है; मत डरो!"

जब निराशा ने उन्हें घेर लिया, तब परमेश्वर ने उन्हें जागने का आह्वान दिया और यह आह्वान एक प्रतिज्ञा के रूप में आया। हाग्गै 2:4-5 हमें दिखाता है कि परमेश्वर निराश हृदय को किस प्रकार उत्तर देता है—'हियाव बाँधो... क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ... मत डरो।'

निराशा हर किसी को घेर सकती है, इसलिए परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति को आश्वासन देता है और अपनी सामर्थ्य तथा उपस्थिति के द्वारा प्रोत्साहित होने के लिए बुलाता है।

मजबूत बने रहने का कारण उनकी अपनी क्षमता या परियोजना का आकार कभी नहीं था। वह परमेश्वर की उपस्थिति थी। ठीक इसी बात के प्रति वे अनजान हो गए थे। वे अपने सामने छोटे मंदिर को देखने में इतने व्यस्त थे कि उनके साथ रहने वाले परमेश्वर को भूल गए।

हम इस सच्चाई के प्रति अनजान हो जाते हैं कि परमेश्वर हमारे साथ है। हम काम के आकार और अपने प्रयासों की छोटी मात्रा को देखते हैं और यह भूल जाते हैं कि हमारे साथ कौन काम कर रहा है। जो काम छोटा दिखाई देता है, परमेश्वर उसका उपयोग अद्भुत कार्य करने के लिए कर सकता है।

'हियाव बाँधो'—यह याद रखने का आह्वान है कि परमेश्वर आपके साथ मिलकर काम करता है। हम जो कुछ करते हैं वह अकेले नहीं करते, क्योंकि परमेश्वर का आत्मा हममें बना रहता है, ताकि हम वह कार्य कर सकें जिसके लिए उसने हमें बुलाया है।

हाग्गै 2:6-9

6 "क्योंकि सेनाओं का यहोवा यों कहता है: 'थोड़ी ही देर में मैं एक बार फिर आकाश और पृथ्वी, समुद्र और स्थल को हिला दूँगा;

7 'और मैं सब जातियों को हिला दूँगा, और सब जातियों की मनभावनी वस्तुएँ आएँगी, और मैं इस भवन को अपनी महिमा से भर दूँगा,' सेनाओं का यहोवा कहता है।

8 ‘चाँदी मेरी है और सोना भी मेरा है,’ सेनाओं का यहोवा कहता है।

9 ‘इस पिछले भवन की महिमा पहले भवन की महिमा से बढ़कर होगी,’ सेनाओं का यहोवा कहता है। ‘और इस स्थान में मैं शांति दूँगा,’ सेनाओं का यहोवा कहता है।”

परमेश्वर आगे चलकर यह प्रतिज्ञा करता है (हाग्गै 2:6-9) कि यह छोटा और साधारण दिखने वाला मंदिर पहले मंदिर से भी अधिक महिमा प्राप्त करेगा। परमेश्वर उन्हें केवल जागने का आह्वान ही नहीं देता, बल्कि अपनी प्रतिज्ञाओं के द्वारा उसे दृढ़ भी करता है।

परमेश्वर कार्य करने की प्रतिज्ञा करता है (पद 6-7): वे जो काम कर रहे थे, वह उनकी कल्पना से कहीं अधिक बड़े कार्य का हिस्सा बनने वाला था। परमेश्वर कार्य करेगा और उनकी विश्वासयोग्यता उसके कार्य में शामिल होगी।

हमें स्वयं परिणाम का बोझ उठाने की आवश्यकता नहीं है। हमारा काम निर्माण करते रहना है और परमेश्वर अपने उद्देश्यों को पूरा करेगा।

परमेश्वर भवन को महिमा से भरने की प्रतिज्ञा करता है (पद 7): यह महिमा भवन की गुणवत्ता से नहीं आएगी। यह परमेश्वर की उपस्थिति से आएगी। परमेश्वर के भवन को महिमामय बनाने वाली बात उसकी उपस्थिति और उसकी महिमा है।

परमेश्वर प्रदान करने की प्रतिज्ञा करता है (पद 8): परमेश्वर लोगों को याद दिलाता है कि उनकी हर आवश्यकता उसी की है और उसी से पूरी होगी।

जब परमेश्वर हमें कुछ बनाने के लिए कहता है, तो वह उस कार्य के लिए आवश्यक सभी चीज़ें प्रदान करता है।

परमेश्वर अधिक महिमा और शांति की प्रतिज्ञा करता है (पद 9): परमेश्वर उन्हें आने वाले समय के लिए आशा देता है।

III. पवित्रता के प्रति जागें

निर्माण कार्य शुरू करने के तीन महीने बाद, लोग परमेश्वर की वेदी पर काम कर रहे थे और पुनर्स्थापित वेदी पर बलिदान चढ़ा रहे थे (एज्रा 3:2-6)।

परमेश्वर ने पवित्रता के विषय में एक प्रश्न लेकर हाग्गै को याजकों के पास भेजा। मंदिर पर उनका काम सही था और वेदी पर पहले से ही बलिदान चढ़ाए जा रहे थे। परमेश्वर ने पवित्रता के विषय को उठाया ताकि वे समझ सकें कि परमेश्वर का कार्य और उसके उद्देश्यों को पूरा करना, उसके साथ विश्वासयोग्य संबंध का विकल्प नहीं हो सकता। वह उन्हें अपने जीवन की जाँच करने और उसके पास लौटने के लिए बुलाता है।

परमेश्वर ने इस बात पर ज़ोर दिया कि बाहरी काम किसी व्यक्ति को पवित्र नहीं बनाते। वह ऐसा हृदय चाहता था जो पूरी तरह उसकी ओर फिर जाए।

हाग्गै 2:12-14

12 "यदि कोई अपने वस्त्र के आँचल में पवित्र मांस बाँधकर ले जाए, और वह आँचल रोटी या पकाए हुए भोजन, दाखमधु या तेल, या किसी भोजन की वस्तु को छू ले, तो क्या वह वस्तु पवित्र हो जाएगी?" तब याजकों ने उत्तर दिया, "नहीं।"

13 तब हाग्गै ने कहा, "यदि कोई मनुष्य किसी शव के कारण अशुद्ध हो और इन वस्तुओं में से किसी को छू ले, तो क्या वह वस्तु अशुद्ध हो जाएगी?" याजकों ने उत्तर दिया, "वह अशुद्ध हो जाएगी।"

14 तब हाग्गै ने उत्तर दिया, "यहोवा की यह वाणी है, 'मेरे सामने ये लोग और यह जाति ऐसी ही है; और उनके हाथों का हर एक काम भी ऐसा ही है; और वे वहाँ जो कुछ चढ़ाते हैं, वह अशुद्ध है।'"

हाग्गै याजकों को एक छोटा-सा पाठ सिखाता है। पवित्रता स्पर्श के द्वारा उसी प्रकार नहीं फैलती, जिस प्रकार अशुद्धता फैलती है। कोई शुद्ध वस्तु किसी अशुद्ध वस्तु को शुद्ध नहीं बनाती, लेकिन अशुद्ध वस्तु किसी शुद्ध वस्तु को अशुद्ध कर देती है। वह इस बात पर ज़ोर देता है कि धार्मिक कार्य उस पाप को मिटा नहीं सकते जिसे हम अब भी पकड़े हुए हैं।

यह संभव है कि हम धार्मिक गतिविधियों में पूरी तरह व्यस्त रहें और साथ ही ऐसे पाप को पकड़े रहें जिसके लिए हमने पश्चाताप नहीं किया है। यह ऐसी बात है जिसे परमेश्वर स्पष्ट रूप से देखता है, लेकिन हम इसके प्रति अनजान हो जाते हैं। जब हम पाप करते हैं और फिर परमेश्वर को कुछ अर्पित करने का प्रयास करते हैं, तो हम अपनी भेंट को अशुद्ध कर देते हैं।

अच्छे काम उस पाप को मिटा नहीं सकते जिसे स्वीकार नहीं किया गया है। पाप उस वस्तु को प्रभावित करता है जिसे हम अर्पित करते हैं। केवल वह प्रायश्चित का बलिदान जो परमेश्वर स्वयं हमारी ओर से देता है, ऐसा कर सकता है। केवल वही हमें क्षमा कर सकता है।

हम स्वयं को सेवा में पूरी तरह लगा सकते हैं और फिर भी किसी गुप्त पाप, मनमुटाव या समझौते को छिपाकर रख सकते हैं।

सेवकाई में शामिल होने से वह गुप्त पाप मिट नहीं जाता जिसे हम पकड़े हुए हैं।

बाइबल पढ़ने और प्रार्थना करने से वह चुगली मिट नहीं जाती जिसे हम लगातार करते रहते हैं।

हर सप्ताह कलीसिया में उपस्थित रहने से हम परमेश्वर के साथ सही नहीं हो जाते।

ऑनलाइन पवित्रशास्त्र के वचन पोस्ट करना, हमारे वास्तविक जीवन में ईमानदार होने का विकल्प नहीं है।

रविवार की आराधना सोमवार को हमारे जीवन जीने के तरीके को ढक नहीं देती।

अच्छी बात यह है कि परमेश्वर बात को यहीं समाप्त नहीं करता। इसके बाद के वचनों में वह प्रतिज्ञा करता है कि जिस दिन लोग उसकी ओर लौटेंगे, उसी दिन से उन्हें आशीष मिलेगी (2:19)।

परमेश्वर हमें पश्चाताप और पवित्रता के लिए बुलाता है। परमेश्वर के लिए किया गया ऐसा कार्य जिसमें हृदय उसकी ओर नहीं फिरा है, अशुद्ध है।

IV. उस राज्य के प्रति जागें जिसे हिलाया नहीं जा सकता

हाग्गै 2:21-23

21 "यहूदा के राज्यपाल जरुब्बाबेल से कह, 'मैं आकाश और पृथ्वी को हिला दूँगा।

22 मैं राज्यों के सिंहासनों को उलट दूँगा; मैं अन्यजातियों के राज्यों की शक्ति को नष्ट कर दूँगा। मैं रथों और उन पर सवार लोगों को उलट दूँगा; घोड़े और उनके सवार गिर पड़ेंगे, और हर एक अपने भाई की तलवार से मारा जाएगा।

23 सेनाओं का यहोवा कहता है, 'उस दिन मैं तुझे, हे मेरे दास जरुब्बाबेल, जो शालतीएल का पुत्र है, ले लूँगा,' यहोवा कहता है, 'और तुझे अपनी मुहर की अंगूठी के समान बनाऊँगा; क्योंकि मैंने तुझे चुन लिया है,' सेनाओं का यहोवा कहता है।"

हाग्गै के समय में यहूदा एक छोटा और महत्वहीन समुदाय था, जो शक्तिशाली राज्यों से घिरा हुआ था। परमेश्वर ने जातियों को हिलाने और उनकी शक्ति को गिराने की प्रतिज्ञा की। फिर परमेश्वर ने अपने चुने हुए दास जरुब्बाबेल के बारे में बात की और मुहर की अंगूठी का उदाहरण दिया—जो उसके स्वामी के अधिकार का प्रतिनिधित्व करने वाली मुहर थी। जरुब्बाबेल दाऊद के वंश का था, जिसके माध्यम से परमेश्वर की प्रतिज्ञा अंततः यीशु तक पहुँचने वाली थी, वह राजा जिसमें परमेश्वर का शासन आता है।

परमेश्वर ने जरुब्बाबेल को यह प्रतिज्ञा तब दी जब यहूदा छोटा और राजनीतिक रूप से कमज़ोर था। लोगों को आसानी से ऐसा लग सकता था कि उनके आसपास के शक्तिशाली राष्ट्र ही भविष्य को नियंत्रित करते हैं। लेकिन परमेश्वर कहता है कि वह जातियों को हिलाएगा और उनकी शक्ति को उलट देगा। कोई भी साम्राज्य, सरकार या मानवीय अधिकार हमेशा बना नहीं रहता; परमेश्वर के उद्देश्य उन सभी से अधिक स्थायी हैं।

इब्रानियों 12:28

इसलिये जब कि हम ऐसा राज्य पाते हैं जो हिलने का नहीं, तो हम अनुग्रह ग्रहण करें, जिसके द्वारा भक्ति और भय सहित परमेश्वर की ऐसी सेवा करें जिससे वह प्रसन्न हो।

इब्रानियों 12:28 हमें सभी राज्यों को हिलाने की परमेश्वर की प्रतिज्ञा की याद दिलाता है। यह हमें इस स्थायी सच्चाई की ओर भी संकेत करता है कि हम ऐसा राज्य प्राप्त कर रहे हैं जिसे हिलाया नहीं जा सकता।

राष्ट्र, संस्थाएँ, धन, प्रतिष्ठा, शक्तियाँ और यहाँ तक कि जीवन जीने के परिचित तरीके भी बदल सकते हैं और समाप्त हो सकते हैं। परमेश्वर का राज्य बना रहता है। यीशु के द्वारा हम उस राज्य के हैं और हमें परमेश्वर की सेवा करने के लिए बुलाया गया है। हम भक्ति और परमेश्वर के भय के साथ उसकी सेवा करते हैं।

परमेश्वर ने जरुब्बाबेल को अपने उद्देश्यों की सेवा करने के लिए तब चुना जब यहूदा छोटा दिखाई देता था। मसीह में हमारा मूल्य और उद्देश्य भी परमेश्वर के चुनाव पर आधारित है—न कि हमारी स्थिति, प्रभाव, उपलब्धियों या परिणामों पर। जब हमारा जीवन हिलाया जाता है—चाहे वह हमारा स्वास्थ्य, आर्थिक स्थिति, प्रतिष्ठा, संबंध या योजनाएँ हों—तब भी हम हर अनिश्चितता का सामना आशा के साथ कर सकते हैं। क्योंकि हमारी सबसे गहरी सुरक्षा परमेश्वर के अडिग राज्य में है।

इसलिए विचार करें कि आप उस चीज़ में कैसे निवेश कर सकते हैं जिसे हिलाया नहीं जा सकता: लोगों की देखभाल करना, सुसमाचार साझा करना और उसके अनुसार जीवन जीना, प्रार्थना के लिए समय निकालना, उदारता से देना, मसीह के प्रेम से दूसरों से प्रेम करना और दूसरों को विश्वास में बढ़ने में सहायता करना। ये परमेश्वर के राज्य की सेवा करने के तरीके हैं।

सारांश:

परमेश्वर ने हाग्गै के माध्यम से अपने लोगों को चार बार जागृत किया। आज भी वह हमें अपनी प्राथमिकताओं को सही करने के लिए जागृत कर रहा है।

1. गलत प्राथमिकताओं के प्रति जागें (हाग्गै 1:2-9)

हमें अपने चालचलन पर विचार करने और परमेश्वर को अपनी प्राथमिकताओं में सबसे पहले स्थान देने की याद दिलाई जाती है। यह पहले उसके राज्य की खोज करने का आह्वान है (मत्ती 6:33)।

2. उस परमेश्वर के प्रति जागें जो आपके साथ है (हाग्गै 2:4-9)

उसके उद्देश्य को पूरा करते समय मजबूत बने रहने का कारण हमारी क्षमता नहीं, बल्कि उसकी उपस्थिति है।

3. पवित्रता के प्रति जागें (हाग्गै 2:10-19)

परमेश्वर के लिए व्यस्त रहना और पवित्र होना एक ही बात नहीं है। परमेश्वर हमारे हृदय चाहता है।

4. उस राज्य के प्रति जागें जिसे हिलाया नहीं जा सकता (हाग्गै 2:20-23; इब्रानियों 12:26-28) बाकी सब कुछ हिलाया जा सकता है, लेकिन उसका राज्य नहीं। अपना जीवन यीशु पर बनाइए, जो कभी नहीं गिरेगा।

सुसमाचार और उद्धार का आह्वान

अलौकिक सेवकाई का समय

पवित्र आत्मा की अगुवाई के अनुसार सेवकाई करें

लाइफ ग्रुप अध्ययन मार्गदर्शिका

जागें! अपनी प्राथमिकताएँ फिर से तय करें!

***रविवार*, 8 *नवंबर* 2026**

यह जीवन समूह की चर्चाओं में उपयोग के लिए एक सरल मार्गदर्शिका है। हमारा उद्देश्य रविवार के उपदेश के व्यावहारिक अनुप्रयोग पर ध्यान केंद्रित करना है—कि कैसे प्रत्येक व्यक्ति वचन पर चलने वाला बन रहा है और परमेश्वर के पवित्र वचन पर अपना जीवन बना रहा है। जीवन समूह की बैठक सामान्यतः 1.5 से 2 घंटे तक चलेगी। प्रत्येक जीवन समूह में अधिकतम 12-15 लोग होंगे।

तैयारी

***जीवन समूह अगुवा: ***जीवन समूह की बैठक की तैयारी करने के लिए, आप उपदेश सुन सकते हैं या रविवार के उपदेश के नोट्स को दोबारा देख सकते हैं। कृपया जीवन समूह की बैठक के दौरान सभी लोगों से पूरे उपदेश के नोट्स पढ़ने के लिए न कहें। आपको केवल इतना करना है कि प्रत्येक व्यक्ति से नीचे दिए गए पवित्रशास्त्र के वचनों को पढ़वाएँ और फिर नीचे दिए गए प्रश्नों के आधार पर चर्चा, सहभागिता और सीखने का समय आरम्भ करें। ये सभी सामग्री "All Peoples Church Bangalore" मोबाइल ऐप में या हमारी उपदेशों की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। जीवन समूह की बैठक के लिए प्रार्थना करें और पवित्र आत्मा के कार्य और सेवकाई को आमंत्रित करें।

स्वागत

जीवन समूह की बैठक का आरम्भ प्रार्थना, आराधना और किसी मनोरंजक गतिविधि के समय से किया जा सकता है।

परमेश्वर के वचन को सुनें

निम्नलिखित पवित्रशास्त्र के संदर्भों को पढ़ेंs:

हाग्गै 1,2

इब्रानियों 12:26-28

मिलकर परमेश्वर के वचन की जाँच करें

जीवन समूह चर्चा पर आधारित और सहभागितापूर्ण बैठक है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को अपनी सीख साझा करने का अवसर दिया जाता है। इनमें से कुछ प्रश्नों पर मिलकर चर्चा करें और लोगों को अपनी समझ साझा करने के लिए पर्याप्त समय दें। हम प्रोत्साहित करते हैं कि समूह चर्चा के दौरान प्रत्येक व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत सीख के नोट्स बनाए।

जीवन समूह चर्चा पर आधारित और सहभागितापूर्ण बैठक है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को अपनी सीख साझा करने का अवसर दिया जाता है। इनमें से कुछ प्रश्नों पर मिलकर चर्चा करें और लोगों को अपनी समझ साझा करने के लिए पर्याप्त समय दें। हम प्रोत्साहित करते हैं कि समूह चर्चा के दौरान प्रत्येक व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत सीख के नोट्स बनाए।

Q1, आप अपनी गलत प्राथमिकताओं के रूप में किन बातों को पहचानते हैं? कौन-सी प्राथमिकताएँ अपने सही स्थान से हट गई हैं, और परमेश्वर आपसे किन बातों पर विचार करने के लिए कह रहा है?

Q2, परमेश्वर हमारी किसी भी धार्मिक गतिविधि या बाहरी सेवा के कार्यों से अधिक पवित्रता चाहता है। आपके जीवन के किस क्षेत्र में परमेश्वर आपको और अधिक पूरे मन से पवित्रता का अनुसरण करने के लिए बुला रहा है?

Q3, आप परमेश्वर के उस राज्य में अपने अनुग्रह, वरदानों और संसाधनों का निवेश कैसे कर सकते हैं जिसे हिलाया नहीं जा सकता?

प्रत्येक व्यक्ति कुछ मिनट (अधिकतम 3 मिनट) लेकर एक या दो मुख्य बातें साझा कर सकता है और बता सकता है कि वह उन्हें अपने जीवन की विशिष्ट परिस्थितियों में कैसे लागू करने की योजना रखता है। प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने और अपनी बात साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

अपने जीवन और आत्मिक यात्रा को साझा करके संगति करें

प्रत्येक व्यक्ति कुछ मिनट (अधिकतम 3 मिनट) लेकर परमेश्वर के साथ अपने जीवन की यात्रा से जुड़ी कोई बात, वह बात जिसे परमेश्वर उसे सिखा रहा है, प्रार्थना के उत्तर की कोई गवाही या कोई विशेष चुनौती साझा करे, जिसके लिए वह प्रार्थना चाहता है। प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने और अपनी बात साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

एक-दूसरे के लिए प्रार्थना और सेवकाई करके एक-दूसरे को प्रोत्साहित करें

दो या तीन लोगों के छोटे समूह बनाएँ और बारी-बारी से आज सीखी गई बातों के प्रकाश में परमेश्वर का धन्यवाद करें और एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करें। पवित्र आत्मा की सुनें। अपेक्षा करें कि पवित्र आत्मा के वरदान प्रवाहित हों, चंगाई लाएँ, चमत्कार प्रकट करें, भविष्यवाणी करें, आदि।

फिर से एक साथ एकत्रित हों और निम्नलिखित बातों के लिए मिलकर प्रार्थना करें:

1, परिवारों की सुरक्षा और मजबूती के लिए।

2, एक कलीसिया के रूप में हम पर और हमारे माध्यम से हमारे शहर और राष्ट्र के अनेक लोगों को आशीष देने के लिए परमेश्वर के पवित्र आत्मा के सामर्थी उंडेले जाने के लिए। केवल परमेश्वर के आत्मा का सामर्थी कार्य ही हमारे शहर और राष्ट्र को बदल सकता है।

3, BUILD TO IMPACT परियोजना के लिए—कि सभी व्यवस्थाएँ अच्छी तरह से पूरी हों, जब हम प्रभु और लोगों की सेवा करने के लिए अपने बाइबल कॉलेज और कलीसिया की सुविधाओं की योजना बनाते और उनका निर्माण करते हैं।

मिलकर परमेश्वर का धन्यवाद करते हुए बैठक का समापन करें।